ये अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

26-04-2026

कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

Imbibe the virtues of sweetness and humility to become great.

Some things are softened by heating them and they can then be moulded. Here too, heat is a form of power and softness is humility, that is, love. Those who have love for every soul will be able to have humility. When there is no love, you won't be able to remain merciful or humble. In being an embodiment of power, you are a master, and in humility, there is the virtue of serving. When there is the heat and the softness, you will then be able to mould yourself to every situation.